ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—14/04/2021 मंत्र -प्रेमचंद

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

एन सी ई आर टी पर आधारित

संध्या का समय था। डॉक्टर चड्ढा गोल्फ खेलने के लिए तैयार हो रहे थे। मोटर कार सामने खड़ी थी कि दो कहार एक डोली लिए आते दिखाई दिए। डोली के पीछे बूढ़ा लाठी टेकता चला आ रहा था। डोली औषधालय के सामने आकर रुक गयी। बूढ़े ने धीरे-धीरे आकर द्वार पर पड़ी हुई चिक से झाँका। ऐसी साफ-सुथरी जमीन पर पैर रखते हुए भय हो रहा था कि कोई घुड़क न बैठे। डॉक्टर साहब को मेज़ के सामने खड़े देखकर भी कुछ कहने का साहस न हुआ।

डॉक्टर साहब ने चिक के अंदर से गरजकर कहा, "कौन है? क्या चाहता है?" बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा, "हुजूर, बड़ा गरीब आदमी हूँ? मेरा लड़का कई दिन से.... ।"

डॉक्टर साहब ने कहा, "कल सबेरे आओ, कल सवेरे, हम इस वक्त मरीजों को नहीं देखते।" बूढ़े ने कहा, "दुहाई है सरकार की! लड़का मर जाएगा।

हुजूर! चार दिन से आँखे नहीं...."

डॉक्टर चड्ढा ने कहा, "कल सवेरे आओ, कल सवेरे; यह हमारे खेल का समय है।"
~~~~~~~~~~

बूढ़े ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी और रोकर कहा, "हुजूर, एक निगाह देख लें! बस एक निगाह! लड़का हाथ से चला जाएगा हुजूर। सात लड़कों में यही एक बच रहा है हुजूर! हम दोनों आदमी रो-रोकर मर जाएँगे, सरकार! आपकी बढ़ती होय, दीनबंधु !"

मगर डॉक्टर साहब ने उसकी ओर मुँह फेरकर देखा तक नहीं।मोटर पर बैठकर

बोले, "कल सवेरे आना।"

मोटर चली गयी। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते, शायद उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। जब तक बूढ़े को मोटर दिखाई दी, वह टकटकी लगाए उस ओर ताकता रहा। शायद उसे अब भी डॉक्टर साहब के लौट आने की आशा थी।

फिर उसने कहारों से डोली उठाने को कहा। डोली जिधर से आयी थी, उधर ही चली गयी चारों ओर से निराश होकर वह चड्ढा के पास आया था। इनकी बड़ी तारीफ सुनी थी। यहाँ से निराश होकर फिर वह किसी दूसरे डॉक्टर के पास न गया। किस्मत ठोंक ली!

उसी रात को उसका हँसता-खेलता सात साल का बालक अपनी बाललीला समाप्त करके इस संसार से सिधार गया। दूढ़े माँ-बाप के जीवन का यही एक आधार था। इसी का मुँह देखकर जीते थे। इस दीपक के बुझते ही जीवन की अँधेरी रात भाँय-भाँय करने लगी। बुढ़ापे की विशाल ममता टूटे हुए हृदय से निकलकर उस अंधकार में आर्तस्वर से रोने लगी।

कई साल गुजर गये। डॉक्टर चड्ढा ने खूब यश और धन कमाया। उनके केवल दो बच्चे हुए, एक लड़का और एक लड़की

लड़की का तो विवाह हो चुका था। लड़का कॉलेज में पढ़ता था। वही माता-पिता जीवन का आधार था। शील और विनय का पुतला, बड़ा ही रसिक, बड़ा ही उदार, विद्यालय का गौरव, युवक-समाज की शोभा। मुखमंडल से तेज की छटा-सी निकलती थी। आज उसी की बीसवीं सालगिरह थी।

संध्या का समय था। शहर के रईस एक तरफ, कॉलेज के छात्र दूसरी तरफ बैठे भोजन कर रहे थे। इस समय वह एक रेशमी कमीज पहने, नंगे सिर, नंगे पाँव इधर से उधर मित्रों की आवभगत में लगा हुआ था। कोई पुकारता, "कैलाश, जरा इधर आना।" कोई उधर से बुलाता, "कैलाश, क्या उधर ही रहोगे?" सभी उसे छेड़ते थे, चुहलें करते थे, बेचारे को जरा दम मारने का भी अवकाश न मिलता था। सहसा एक रमणी ने उसके पास आकर कहा, "क्यों कैलाश! तुम्हारा साँप कहाँ है? जरा मुझे दिखा दो।"

कैलाश ने उससे हाथ मिलाकर कहा, "मृणालिनी, इस वक्त क्षमा करो, कल दिखा दूँगा। मृणालिनी ने आग्रह किया, "जी नहीं, तुम्हें दिखाना पड़ेगा, मैं आज नहीं मानने की। तुम रोज 'कल-कल' करते हो।" दोनों सहपाठी थे और एक-दूसरे के प्रेम में पगे हुए थे। कैलाश को साँपों के पालने, खिलाने और नचाने का शौक था। तरह-तरह के साँप पाल रखे थे। उनके स्वभाव और चरित्र की परीक्षा करता रहता था यह विद्या उसने एक बूढ़े सपेरे से सीखी थी। साँपों की जड़ी-बूटियाँ जमा करने का उसे मर्ज था। इतना पताभर मिल जाए कि किसी व्यक्ति के पास कोई अच्छी जड़ी है, फिर उसे चैन न आता था। उसे लेकर ही छोड़ता था। यही व्यसन था। इस पर हजारों रुपए फूँक चुका था मृणालिनी कई बार आ चुकी थी पर कभी साँपों को देखने के लिए इतनी उत्सुक न हुई थी। कह नहीं सकते, आज उसकी उत्सकुता सचमुच जाग गयी थी या वह कैलाश पर अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहती थी पर उसका आग्रह बेमौका था।

क्रमशः

धन्यवाद

छात्र प्रस्तुत कहानी का पाठन करेंगे।

"